

**यहोवा का शाप दुष्टों के घर पर है,
परन्तु वह धर्मी के घर को आशीर्वाद देता है। नीतिवचन 3:33 –
टेड हिल्डेब्रांट और चैटग्ट द्वारा एक कहावत की कहानी**

ग्रे हॉलो के शांत गांव में दो घर थे, जिन्हें एक सफ़ेद बाड़ और दशकों की कटु नाराजगी ने अलग कर दिया था। बाड़ के बाईं ओर एलियास ग्रेंजर रहता था, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी संपत्ति पूरे शहर में चर्चा का विषय थी। उसकी संपत्ति बहुत बड़ी और भव्य थी, लेकिन उसमें प्यार नहीं था। दाईं ओर मिरियम रहती थी, जो अपने तीन बच्चों के साथ एक साधारण झोपड़ी में रहती थी, जिसमें एक सब्जी का बगीचा था।

सालों पहले, इलियास ने निर्दयी तरीकों से अपना भाग्य बनाया था - पड़ोसियों को ठगना, अधिकारियों को रिश्वत देना, और ऐसी ज़मीन लेना जो कभी उसकी नहीं थी। मिरियम के दिवंगत पति भी ऐसे ही एक पीड़ित थे, जिन्हें सूखे के दौरान अपनी खेती की ज़मीन छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, और एक साल बाद ही इस नुकसान के कारण दिल टूटने से उनकी मृत्यु हो गई। गाँव के कई लोगों ने तिरस्कार या घृणा के कारण इलियास से मुंह मोड़ लिया, लेकिन मिरियम ने कभी भी उसे एक दयालु सिर हिलाकर अभिवादन करना बंद नहीं किया, तब भी जब वह उसका मजाक उड़ाता था।

एक शाम, समुद्र से एक तूफ़ान आया, जो गांव ने पहले कभी नहीं देखा था, उससे कहीं ज़्यादा गहरा और भयंकर था। आसमान में बिजली चमक रही थी और हवाएँ जानवरों की तरह चीख रही थीं। पेड़ गिर रहे थे और छतें चर्मपत्र की तरह फट रही थीं। एलियास की जागीर, अपनी भव्यता के बावजूद, इस प्रकोप का सामना नहीं कर सकी। बिजली उसके घर की ऊँची चोटी पर गिरी, जिससे वह जल उठा। आग भड़क उठी। शुरू में, कोई भी मदद के लिए नहीं आया।

लेकिन बाड़ के उस पार से, मिरियम के सबसे बड़े बेटे ने धुआँ देखा। बिना रुके, उसने अपनी माँ और भाई-बहनों को जगाया। हाथ में बाल्टी लेकर, वे आग की ओर भागे। मिरियम ने मदद के लिए पुकारा, और गाँव के लोग, उस महिला के नेतृत्व में, जिसकी वे प्रशंसा करने आए थे, उनके पीछे चले गए। साथ मिलकर, उन्होंने जो कुछ बचाया, उसे बचाया। एलियास स्तब्ध मौन में खड़ा था, उसका भव्य महल सुलग रहा था, उसका गौरव राख में बदल गया था।

उसके बाद के दिनों में, एलियास को मिरियम के बरामदे पर बैठे देखा गया, मिरियम की पुरानी रजार्ड में से एक में लिपटा हुआ, उसका सिर झुका हुआ था। मिरियम के घर के अंदर एक बार, उसने

चूल्हे में देखा, जहाँ, मेन्टल के ऊपर, उसने एक कढ़ाई की हुई पट्टिका देखी: "भगवान का शाप दुष्टों के घर पर है, लेकिन वह धर्मी के निवास को आशीर्वाद देता है।"

एक समय का शक्तिशाली व्यक्ति अब बदलने लगा। उसने ज़मीन वापस कर दी, जिन लोगों से उसने ठगी की थी, उन्हें पैसे लौटा दिए और घरों के पुनर्निर्माण में मदद की। उसने मिरियम और उसके दोस्तों को टूटे हुए घरों को ठीक करने में मदद की। उसने अपनी हवेली के बचे हुए हिस्से को बेच दिया और उससे हुई कमाई को गांव के स्कूल के पुनर्निर्माण के लिए दान कर दिया। लोगों ने बदलाव को देखा, उसकी दौलत में नहीं, बल्कि उसकी आँखों में। वे अब लालच से नहीं जलते थे, बल्कि कृतज्ञता, उदारता और खुशी से भरे हुए थे।

एक शरद ऋतु की शाम, वह मिरियम के सामने उसके लिविंग रूम में बैठा था।

"मुझे कभी समझ नहीं आया," उसने धीरे से कहा, "तुमने मेरी मदद क्यों की।"

मिरियम ने मुस्कुराते हुए उस पुरानी कढ़ाई वाली पट्टिका की ओर इशारा किया: "दुष्टों के घर पर प्रभु का शाप होता है, लेकिन वह धर्मी के घर को आशीर्वाद देता है" (नीतिवचन 3:33)

उसने सिर हिलाया, उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे आखिरकार उस पुरानी कहावत की सरल सच्चाई के ज़रिए ज्ञान मिल गया था।